भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन में क्रान्तिकारी रामप्रसाद बिस्मिल की भूमिका का विश्लेषण

किरन बिष्ट*

सारांश

अपनी कलम और पिस्तौल को हथियार बनाकर अंग्रेजों की नाक पर दम करने वाले रामप्रसाद बिस्मिल भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन के क्रान्तिकारियों में से एक अमर शहीद हैं। पं0 रामप्रसाद बिस्मिल ने अपने जीवन के महत्वपूर्ण ग्यारह वर्ष भारतीय संग्राम को समर्पित कर दिये एवं उन्नीस वर्ष की आयु में क्रान्ति के कठिन मार्ग में प्रवेश किया तथा अपने जीवन के मूल्यवान ग्यारह वर्ष देश को आजाद कराने में लगा दिये। अलौकिक व्यक्तित्व के धनी तथा कुशल नेतृत्व के स्वामी बिस्मिल जी ने क्रान्तिकारी आन्दोलन को वृहत स्तर तक संगठित एवं संचालित किया। बिस्मिल जी ने इस बात को मान लिया था कि क्रान्तिकारी आन्दोलन की सफलता के लिये क्रान्तिकारी दल का सुदृढ़ संगठन आवश्यक था। जैसा कि पं0 राम दुलारे त्रिवेदी, जो काकोरी काण्ड में बिस्मिल के सहयोगी रहे थे, ने लिखा था कि – ''हिन्दुस्तान की आजादी का कोई आन्दोलन, चाहे वह किसी नीति का क्यों न हो, सुनियोजित, सुसंगठित और अखिल भारतीय रूप में होने पर ही सफल हो सकता है अन्यथा नहीं''।

इसी बात को बिस्मिल भी भली–भांति समझते थे, चूंकि उस समय में क्रान्तिकारी आन्दोलन धीमी गति के दौर से गुजर रहा था। ऐसे वक्त में बिस्मिल ने क्रान्तिकारी दल की संगठनात्मक शक्ति को बढ़ाने का भरपूर प्रयास किया। उन्होंने अपने सहयोगी क्रान्तिकारियों के साथ मिलकर 'हिन्दुस्तान प्रजातन्त्र संघ' की स्थापना की जिससे क्रान्तिकारी आन्दोलन को परिपक्व आधार मिला। पं0 रामप्रसाद बिस्मिल ने क्रान्तिकारी आन्दोलन के स्वर तथा उद्देश्यों से जनता को अवगत कराने हेतु छद्म नाम से क्रान्तिकारी सन्देश पर्चों के रूप में देशवासियों तक पहुँचाया। जिसे 'रिवोल्यूशनरी पर्चा' कहा गया। बिस्मिल का मानना था कि जब तक देशवासी क्रान्तिकारी आन्दोलन को सम्पूर्ण रूप से समझकर उसका सहयोग नहीं करते तब तक क्रान्तिकारी आन्दोलन की सफलता निश्चित नहीं है। क्रान्तिकारी गतिविधियों को अंजाम देने के लिये हथियारों और धन की विशेष आवश्यकता होती थी। इस आवश्यकता की पूर्ति ऐच्छिक चन्दे व डकैती डालकर की जाती थी। परन्तु ऐच्छिक चन्दा एवं पार्टी के सदस्यों द्वारा दिया गया चन्दा क्रान्तिकारी कार्यों को सम्पन्न कराने के लिये ना के बराबर था, इस कारण से क्रान्तिकारियों एवं बिस्मिल ने डकैती को ही उचित माना। उस समय अंग्रेजी सरकार के हाथों की कठपुतली रईस जमींदार वर्ग को ही डकैती का निशाना बनाये जाने का पूर्ण समर्थन किया गया। बिस्मिल के नेतृत्व में अति महत्वपूर्ण क्रान्तिकारी गतिविधियों को पूर्ण किया जाने लगा। उन्होंने अपनी क्रान्तिकारी गतिविधियों से अंग्रेजी सत्ता के नाक में दम कर दिया था। पं0 रामप्रसाद बिस्मिल ने अपनी प्रतिभा तथा अखण्ड़ पुरूषार्थ के बलबूते देशव्यापी क्रान्तिकारी संगठन भी खड़ा किया, जिसमें एक से बढ़कर एक तेजस्वी व वीर नवयुवक शामिल थे, जो बिस्मिल के एक इशारे पर देश की व्यवस्था में आमूल परिवर्तन ला सकते थे।

शब्द संकेत : आन्दोलन, क्रान्तिकारी, नेतृत्व, भारतीय, आजादी, युवा, स्वाधीनता।

उद्देश्य

प्रस्तावित शोध पत्र का उद्देश्य पं0 रामप्रसाद बिस्मिल की भूमिका का उचित मूल्यांकन करते हुए उनके भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन के क्रान्तिकारी पक्ष की महत्ता को स्पष्ट करना है। इस शोध पत्र के माध्यम से पं0 रामप्रसाद बिस्मिल जिन्होंने भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन में एक क्रान्तिकारी के रूप में महत्वपूर्ण भूमिका अदा की है। यदि उनको उचित महत्व और सम्मान प्राप्त हो तो यह शोध पत्र अपने उद्देश्य में सफल हो जायेगा।

अध्ययन पद्धति

प्रस्तुत शोध पत्र में ऐतिहासिक, विवरणात्मक एवं विश्लेषणात्मक अध्ययन पद्धति का प्रयोग किया गया है।

प्रस्तावना

'काकोरी काण्ड' क्रान्तिकारी आन्दोलन के भारतीय इतिहास का वह स्वर्णिम अध्याय है जिसके प्रमुख नायक पं0 रामप्रसाद बिस्मिल को माना जाता है। काकोरी काण्ड़ के इस नायक ने अंग्रेजी साम्राज्य को इस बात को महसूस कराया कि ब्रिटिश साम्राज्य का सूरज अवश्य अस्त होगा, यद्यपि उन दिनों यह कहा जाता था कि अंग्रेजी राज्य में सूरज कभी नहीं

* शोध छात्रा, डी0एस0बी0 परिसर, कुमाऊँ विश्वविद्यालय, नैनीताल

डूबता, परन्तु दासता का यह सूरज भारतीय हिन्द महासागर में डूबेगा–'काकोरी काण्ड' ने खुलेआम यह चेतावनी अंग्रेजी शासन को दे दी थी।' अंग्रेजों ने बिस्मिल को काकोरी काण्ड के पुरस्कार स्वरूप मृत्युदण्ड दिया। फांसी से पहले रामप्रसाद बिस्मिल ने ब्रिटिश शासन के विनाश की तीव्र इच्छा प्रकट की थी। बिस्मिल के फांसी के बाद यह इच्छा प्रत्येक भारतीय नवयुवक के हृदय में हिलोरे भरने लगी थी, इन्हीं हिलोरों ने क्रान्ति की चिंगारी को भड़कती ज्वाला में बदल दिया था। पं0 रामप्रसाद बिस्मिल ने अन्तिम श्वास तक भारत की स्वतन्त्रता के लिये संघर्ष को जारी रखा तथा उनके बलिदान ने भारतीय जनमानस में राष्ट्रीय स्वाभिमान को जागृत किया एवं पराधीनता के प्रति घृणा का भाव उत्पन्न किया था। पं0 रामप्रसाद बिस्मिल के क्रान्तिकारी जीवन की प्रमुख गतिविधियों के माध्यम से भारतीय स्वतन्त्रता संग्राम में उनकी भूमिका को भली–भांति समझा जा सकता है। पं0 रामप्रसाद बिस्मिल की प्रमुख क्रान्तिकारी गतिविधियों का विवरण निम्न प्रकार है–

सबसे पहले हम उनके मैनपुरी षड़यन्त्र की योजना की बात करते हैं– यह योजना सन् 1917 ई0 में पण्डित गेंदालाल दीक्षित द्वारा बनाई गई थी। बिस्मिल, पं0 गेंदालाल दीक्षित से अत्यधिक प्रभावित थे, इसलिये बिस्मिल ने दीक्षित को अपना क्रान्तिकारी गुरू मान लिया था। बिस्मिल ने पं0 गेंदालाल दीक्षित के मार्गदर्शन में एक संगठन 'मातृदेवी' के नाम से खुद खड़ा कर लिया था, परन्तु बाद में मातृदेवी संस्था का विलय शिवाजी समिति में करने के बाद दोनों ने मिलकर कई क्रान्तिकारी योजनाओं पर कार्य किये थे। यद्यपि मैनपुरी षड़यन्त्र की योजना दीक्षित के नेतृत्व में बनायी गई थी परन्तु उनकी गिरफ्तारी के बाद इस दल का नेतृत्व बिस्मिल ने सम्भाल लिया था।

इस दल में छः युवक शाहजहांपुर से थे तथा इस योजना के लिये तीन राइफलें, एक बारह बोर की दोनाली कारतूस बन्दूक, दो टोपीदार बन्दूकें, तीन टोपीदार रिवाल्वर और पांच कारतूसी रिवाल्वर खरीदे। जब पं0 गेंदालाल दीक्षित, बिस्मिल तथा अन्य सदस्यों के साथ मिलकर मैनपुरी षड़यन्त्र की योजना बना रहे थे तभी दल के एक सदस्य सोमदेव द्वारा इस योजना का भेद पुलिस के सामने खोल दिया गया। इसके पश्चात् मैनपुरी में सरकारी पुलिस ने मैनपुरी षड़यन्त्र से जुड़े लोगों को खोजना प्रारम्भ कर दिया। पुलिस ने कई युवकों को गिरफ्तार भी किया परन्तु बिस्मिल जो कि सरकारी पुलिस की नजरों में मैनपुरी षड़यन्त्र के सरगना माने गये थे वे अपने कुछ साथियों के साथ चतुराई से फरार हो गए। नवम्बर सन् 1919 को मजिस्ट्रेट बी0एस0 क्रिस ने मैनपुरी षड़यन्त्र का फैसला सुना दिया। इस षड़यन्त्र की विशेषताएं यह रही कि केवल दो ही व्यक्ति पुलिस के हाथ में आए जिनमें गेंदालाल दीक्षित एक सरकारी गवाह को लेकर भाग गये थे, और श्रीयुत शिवकृष्ण जेल से भाग गये, फिर हाथ ना आए, इस प्रकार मैनपुरी षड़यन्त्र में जो गिरफ्तारी एवं सजा हुई थी उन्हें सन्1920 में आम माफी के ऐलान में छोड़ दिया गया था। पं0 बिस्मिल दो वर्ष भूमिगत रहे, आम माफी की राजकीय घोषणा के पश्चात् बिस्मिल शाहजहांपुर के पुनः निवासी बन गये थे। मैनपुरी षड़यन्त्र में दीक्षित का दाहिना हाथ पं0 रामप्रसाद बिस्मिल को माना गया था। यद्यपि इस मैनपुरी षड़यन्त्र की योजना का भेद न खुलता तो यह षड़यन्त्र अंग्रेजी शासन को अत्यन्त प्रबल चुनौती प्रस्तुत करता।

पीला पर्चा एवं क्रान्तिकारी कार्यक्रम के स्वरूप के अन्तर्गत क्रान्तिकारियों के अखिल भारतीय संगठन 'हिन्दुस्तान प्रजातन्त्र संघ' का गठन करना क्रान्तिकारी आन्दोलन के इतिहास में महत्वपूर्ण घटना थी, क्योंकि इस अखिल भारतीय क्रान्तिकारी संगठन के माध्यम से जहां क्रान्तिकारी नवयुवक भारतीय राजनीति में दखल देना चाहते थे, वहीं दूसरी तरफ वे लोग संगठित होकर अंग्रेज शासन के विरूद्ध संघर्ष करना चाहते थे। क्रान्तिकारी नेताओं ने मिलकर अपने अखिल भारतीय संगठन 'हिन्दुस्तान प्रजातन्त्र संघ' का संविधान तैयार किया। इस संविधान के निर्माण में पं0 रामप्रसाद बिस्मिल, श्री यदुगोपाल मुखर्जी तथा श्री शचीन्द्रनाथ सान्याल जैसे महान विद्वान क्रान्तिकारियों ने योगदान किया। पं0 रामप्रसाद बिस्मिल जब इलाहाबाद गये तो शचीन्द्रनाथ सान्याल के घर पर ही पार्टी का संविधान तैयार किया।

यह संविधान पीले रंग के पर्चों पर अंकित किया गया इसलिये इसे 'पीला पर्चा' के नाम से भी सम्बोधित किया गया था। इस संविधान का मुख्य उद्देश्य आम मताधिकार तथा प्रत्येक प्रकार के मानवीय शोषण का अन्त करना था। पीले पर्चे को संघ के सदस्यों के द्वारा देश–भर में वितरित किया गया। क्रान्तिकारी संगठन का सम्पूर्ण स्वरूप निर्धारित किया गया पीले पर्चे के आधार पर, इस संघ के कार्य के संचालन के लिये प्रत्येक प्रांत से चुने गये प्रतिनिधियों की एक सेन्ट्रल कमेटी रखी गई और उनके फैसलों को एक राय से करने का निश्चय किया गया। इस संगठन में पांच विभाग थे– प्रचार, मनुष्य संग्रह, क्रान्तिवाद और धन–संग्रह, युद्धोपयोगी सामान संग्रह और विदेश संबंध। इस संघ में प्रचार प्रसार करने के लिए खुली और गुप्त प्रेस, व्यक्तिगत रूप से बातचीत, आम सभा–समितियों का संगठन, कथाओं तथा मैजिक लालटेन के साधनों को काम में लाने को कहा गया था। इस संघ को लोगों से जोड़ने का कार्य जिला संगठनकर्ता के अधीन था।

प्रान्तीय समिति की बैठक पीली कोठी धर्मशाला कानपुर में 3 अक्टूबर सन् 1924 में की गई। इस बैठक में प्रमुख क्रान्तिकारी सम्मिलित थे जैसे–पं0 रामप्रसाद बिस्मिल, सुरेशचन्द्र भट्टाचार्य, विष्णुशरण दुब्लिश, शचीन्द्रनाथ सान्याल

आदि। इस बैठक में पार्टी का नेतृत्व बिस्मिल को सौंपकर सान्याल व चटर्जी बंगाल चले गये। पार्टी के लिये फण्ड एकत्र करने की कठिनाई को दूर करने के लिए आयलैण्ड के क्रान्तिकारियों के तरीकों को अपनाया गया और पार्टी की तरफ से पहली डकैती 25 दिसम्बर 1924 को बमरौली में डाली गई जिसका सफल नेतृत्व बिस्मिल जी ने किया था। जब कभी भी दल की ओर से डाका डाला जाता था, उसका नेतृत्व पं0 रामप्रसाद बिस्मिल द्वारा किया जाता था। इसी कारण से दल में बिस्मिल को विशेष सम्मान प्राप्त था। गांवों में डकैतियां डालने से कम धन की प्राप्ति होती थी। अतः बिस्मिल ने यह निर्णय लिया कि किसी भी परिस्थिति में गांव में, मध्यम श्रेणी या उसके नीचे की श्रेणी वालों के यहां डकैती ना डाली जाये।

'दि रिवोल्यूशनरी पर्चे' के अन्तर्गत क्रान्तिकारी दल के सदस्य क्रान्तिकारी आन्दोलन के उद्देश्यों एवं क्रान्तिकारी सिद्धान्तों का प्रचार–प्रसार करने के लिये समय–समय पर पर्चे तथा साहित्य को प्रकाशित किया करते थे। 'दि रिवोल्यूशनरी पर्चे' का लेखक बिस्मिल को माना जाता था। उन्होंने यह पर्चा विजय कुमार के नाम से लिखा था। इस पर्चे के अन्तर्गत पं0 रामप्रसाद बिस्मिल ने क्रान्तिकारी आन्दोलन के उद्देश्यों, क्रान्तिकारियों की शक्ति एवं नवयुवकों को ब्रिटिश सरकार के विरूद्ध संघर्ष करने के लिये प्रेरित किया। इस पर्चे को हिन्दुस्तान तथा बर्मा में खूब बांटा गया था। पर्चे को कम समय में ही पूरे देश में बांटने का श्रेय भी बिस्मिल को ही दिया जाता है। जिन्होंने इस कार्य को सम्पन्न करने के लिये अत्यधिक मेहनत एवं संगठित और योजनाबद्ध तरीके से पर्चा वितरण के कार्य को सम्पन्न किया। 'दि रिवोल्यूशनरी पर्चे' के बारे में लोगों के विचार थे कि इसकी भाषा शैली बहुत ही प्रभावशाली तथा ओजपूर्ण थी, इस कार्य के लिये पं0 रामप्रसाद बिस्मिल की लेखनी अतुलनीय थी।

'दि रिवोल्यूशनरी पर्चे' ने अंग्रेजी शासन में भय और बेचैनी उत्पन्न कर दी थी। सम्पूर्ण देश में एक प्रकार की हलचल उत्पन्न हो गई थी। अंग्रेजी सरकार ने आदेश दिया कि तत्काल इस कार्य को करने वालों की खोज आरम्भ की जाए। वहीं दूसरी तरफ देखा जाये तो भारतीय जनमानस में नवीन आशा की किरण उत्पन्न हो गई थी। भारतीय जनता को इस घटना से यह ज्ञात हुआ कि भारत में एक ऐसी संगठनात्मक शक्ति है जो अंग्रेजी साम्राज्य से मुकाबला करने के लिए तत्पर है। 'दि रिवोल्यूशनरी पर्चे' ने लोगों को यह सोचने पर विवश कर दिया कि संघर्ष के बिना स्वतन्त्रता को प्राप्त नहीं किया जा सकता। इस पर्चे ने भारत की जनता को काफी प्रभावित किया था जिसके कारण सरकारी पुलिस ने कड़ी खोजबीन करना प्रारम्भ कर दिया था। पुलिस से बचने के लिए श्री शचीन्द्रनाथ सान्याल कलकत्ता में भेष बदल छिपे हुए थे लेकिन पुलिस ने कुछ समय के बाद ही उन्हें गिरफ्तार कर लिया। इसी के साथ ही बनारस की पुलिस ने वहीं के एक प्रसिद्ध राजनीतिक कार्यकर्ता श्री रविन्द्रकर को गिरफ्तार कर लिया तथा उन्हें एक वर्ष का कारावास दिया गया, परन्तु बिस्मिल पुलिस की सन्देहात्मक दृष्टि से बचते हुये दल से सम्बन्धित क्रान्तिकारी कार्यों को पूर्ण तत्परता के साथ करते रहे।

काकोरी काण्ड

भारत की आजादी के आन्दोलनों में काकोरी काण्ड की अत्यन्त महत्वपूर्ण भूमिका रही है, लेकिन इस काकोरी काण्ड के बारे में ज्यादा जिक्र सुनने को कम ही मिलता है। इसकी एक वजह यह भी मानी जा सकती है कि इतिहासकारों ने काकोरी काण्ड को ज्यादा अहमियत नहीं दी, लेकिन यह कहना गलत नहीं होगा कि काकोरी काण्ड ही वह घटना रही जिसके बाद देश में क्रान्तिकारियों के प्रति लोगों के दृष्टिकोण बदलने लगे थे और वे पहले से ज्यादा लोकप्रिय होने लगे थे। भारत के स्वतन्त्रता आन्दोलन पर शोध करने वाली डॉ0 रश्मि कुमारी लिखती हैं– '1857 की क्रान्ति के बाद 19वीं सदी के उत्तरार्ध में चापेकर बंधुओं द्वारा आर्यस्ट व रैंड की हत्या के साथ सैन्यवादी राष्ट्रवाद का जो दौर प्रारम्भ हुआ, वह भारत के राष्ट्रीय फलक पर महात्मा गांधी के आगमन तक निर्विरोध जारी रहा, लेकिन फरवरी 1922 में चौरा–चौरी काण्ड के बाद जब गांधी ने असहयोग आन्दोलन को वापस ले लिया तब भारत के युवा वर्ग में जो निराशा उत्पन्न हुई उसका निराकरण काकोरी काण्ड ने ही किया था।

भारत की आजादी के इतिहास में असहयोग आन्दोलन के बाद काकोरी काण्ड को एक महत्वपूर्ण घटना के तौर पर देखा जा सकता है क्योंकि इसके बाद आम लोग अंग्रेजी साम्राज्य से मुक्ति के लिए क्रान्तिकारियों की तरफ और भी ज्यादा उम्मीद भरी नजरों से देखने लगे थे।

9 अगस्त 1925 को क्रान्तिकारियों ने काकोरी में एक ट्रेन में डकैती डाली थी। इसी घटना को इतिहास में 'काकोरी काण्ड' के नाम से सम्बोधित किया जाता है। इस डकैती की योजना और नेतृत्व बिस्मिल के हाथों में था। इस डकैती में क्रान्तिकारी दल के 10 सदस्य सम्मिलित थे जिनमें पं0 रामप्रसाद बिस्मिल, राजेन्द्रनाथ लाहिड़ी, चन्द्रशेखर आजाद, शचीन्द्रनाथ बख्शी, अश्फाक उल्ला खां, बनवारी लाल, मुकुन्दीलाल आदि प्रमुख थे। बिस्मिल ने जो डकैती की योजना का संगठन बनाया वह अद्भुत था। मात्र दस युवकों ने अंग्रेजी सरकार के समक्ष एक अकल्पनीय कार्य करके दिखाया। लेकिन कुछ ऐसी छोटी–मोटी त्रुटियां घटित हुईं जिनसे सरकारी पुलिस इस काण्ड़ को अंजाम देने वाले क्रान्तिकारियों को गिरफ्तार

कर सकी और क्रान्तिकारी दल का संगठन कमजोर हो गया। इस दल के कुछ सदस्यों की अनुभवहीनता एवं उनकी त्रुटियों ने इस डकैती की योजना का भेद प्रकट करने में पुलिस का मार्ग प्रशस्त किया।

काकोरी काण्ड के पश्चात् बिस्मिल पर खुफिया पुलिस की सख्त दृष्टि थी। सरकारी पुलिस किसी भी हाल में उन्हें पकड़ना चाहती थी। बिस्मिल को भी इस बात का अहसास था कि पुलिस उन्हें शीघ्र गिरफ्तार कर सकती है परन्तु वे निश्चिन्त इसलिए रहे क्योंकि उन्हें लगता था कि खुफिया पुलिस उनके विरूद्ध कोई भी साक्ष्य प्रस्तुत नहीं कर सकती। 26 सितम्बर सन् 1925 ई0 का वह काला समय आ गया जब पं0 रामप्रसाद बिस्मिल को पुलिस ने गिरफ्तार कर लिया। 19 दिसम्बर 1927 को महान देशभक्त पं0 रामप्रसाद बिस्मिल को गोरखपुर जेल में फांसी दे दी गई, चलते समय बिस्मिल ने कहा–

''मालिक तेरी रजा रहे और तू ही रहे, बाकी ना मैं रहूं, ना मेरी आरजू रहे,
जब तक कि तन में जान, रगों में लहू रहे, तेरा हो जिक्र या, तेरी ही जुस्तजू रहे।

फांसी के दरवाजे पर पहुंचकर बिस्मिल जी ने कहा, 'मैं ब्रिटिश साम्राज्य का विनाश चाहता हूं'।

इस प्रकार से काकोरी काण्ड के माध्यम से पं0 रामप्रसाद बिस्मिल ने ना केवल ब्रिटिश साम्राज्य को चुनौती दी वरन् भविष्य के क्रान्तिकारियों के लिए एक नई दिशा, मार्ग एवं मजबूत आधार प्रदान किया।

निष्कर्ष

भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन में बिस्मिल की महत्वपूर्ण भूमिका को स्पष्ट करते हुए कहा जा सकता है कि भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन में क्रान्तिकारी आन्दोलन और क्रान्तिकारियों की अहम भूमिका के वर्णन से यह स्पष्ट हो जाता है कि भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन में क्रान्तिकारियों की भूमिका भारतीय स्वाधीनता के अन्य तत्वों के समान ही अत्यन्त महत्वपूर्ण रही है, क्योंकि क्रान्तिकारियों ने अंग्रेजी सत्ता के विरूद्ध संघर्ष के साथ–साथ अपने प्राणों के मूल्य पर स्वाधीनता का संग्राम लड़ा। सर्वप्रथम क्रान्तिकारियों ने देशवासियों को यह अनुभूति करायी कि भारत में ऐसी भी शक्ति है जो ब्रिटिश शासकों को सशक्त प्रतिउत्तर दे सकती है। काकोरी काण्ड के नायक बिस्मिल, चन्द्रशेखर आजाद, भगत सिंह जैसे महान क्रान्तिकारियों के प्रेरणा स्रोत एवं आधार बने, वहीं पं0 रामप्रसाद बिस्मिल अपनी शहादत के पश्चात् उपेक्षा के शिकार रहे हैं और आज भी उनका परिवार अनेक कष्टों को झेल रहा है। प्रश्न यह है कि क्या इसी दिन के लिए पं0 रामप्रसाद बिस्मिल ने मौत को गले लगाया था कि उनकी मृत्यु के पश्चात् यह देश उनको व उनके परिवार के सदस्यों को विस्मृत कर देगा। पं0 रामप्रसाद बिस्मिल ने देश को आजाद कराने के लिए अपने प्राणों का बलिदान दे दिया और दूसरी तरफ उनके इस बलिदान के लिए उन्हें शहीद का राष्ट्रीय सम्मान तक नहीं दिया गया। स्कूली पाठ्यक्रमों में उन्हें हिंसावादी व आतंकवादी कहकर सम्बोधित किया जाता है। भारतीय स्वाधीनता आन्दोलन में उन्होंने जो योगदान दिया उस पर परदा डाल दिया जाता है, तो ऐसे में क्या हम अपनी आने वाली पीढ़ियों को अंधकारमय विरासत की डोर पकड़ाकर उन्हें खोखले भविष्य की ओर नहीं धकेल रहे हैं।

पं0 रामप्रसाद बिस्मिल कहा करते थे कि–''शहीदों की चिताओं पर लगेंगे हर वर्ष मेले। वतन पर मरने वालों का यही बाकी निशां होगा''। पर स्थिति इसके विपरीत है। आज शहीद क्रान्तिकारियों के मजारों पर धूल के गुबार के सिवा कुछ भी नहीं है। यदि हमें अपनी आने वाली पीढ़ियों को देशभक्ति का पाठ पढ़ाना है तो उनको इन क्रान्तिकारियों के बलिदान को समझाना होगा क्योंकि इन क्रान्तिकारियों की महत्वपूर्ण भूमिका को समझे बिना हम कभी अपने इतिहास व देश की विरासत को नहीं समझ पायेंगे।

सन्दर्भ सूची

1. उपाध्याय, रामस्वरूप –अमर शहीद पं0 रामप्रसाद बिस्मिल, रामायणी सत्संग मंदिर प्रकाशक, अम्बाह, पृ0 13
2. धीरज, जीवन परिचय माला रामप्रसाद बिस्मिल, धीरज पॉकेट बुक्स प्रकाशक, पृ0 16–17
3. त्रिवेदी, पं0 रामदुलारे– "काकोरी काण्ड" के दिलजले, लोकहित प्रकाशक, पृ0 53
4. शर्मा, विद्यार्णव –युग के देवता, प्रवीण प्रकाशक, पृ0 62
5. गुप्त, मन्मथनाथ–क्रान्तिकारी आन्दोलन एक दस्तावेज पृ0 68
6. उपाध्याय, रामस्वरूप– अमर शहीद पं0 रामप्रसाद बिस्मिल, रामापणी सत्संग मंदिर प्रकाशक, अम्बाह, पृ0 58
7. जादौन, बिशेन्द्र पालसिंह– अमर शहीद रामप्रसाद बिस्मिल शहीद की गाथा, गांधीपन प्रकाशक, पृ0 84
8. अमर, शहीद रामप्रसाद बिस्मिल, प्रकाशक, साधना पब्लिकेशन, संस्करण 2005, पृ 81
9. गिल, त्रिलोचन सिंह– भारत का स्वातंत्रय संघर्ष, ग्वालियर प्रकाशक, संस्करण–1980